अलर्क रोग (रेबीज)

अलर्क रोग जिसे जलांतक भी कहते है, एक घातक पशुजन्यरोग है।
यह रेबीज विषाणु से होता है जो पशुओं और मनुष्यों दोनो को ही ग्रसित करता है।
एक बार रौगिक लक्षण आने पर यह सत प्रतिशत घातक होता है।

श्वान, लोमडी, सियार, भेंडिया, बिल्ली, बाबकैट, शेर, गिलहरी, शंक्स, बेड्जर, चमगादड, और बंदर में मुख्यत: यह रोग पाया जाता है।

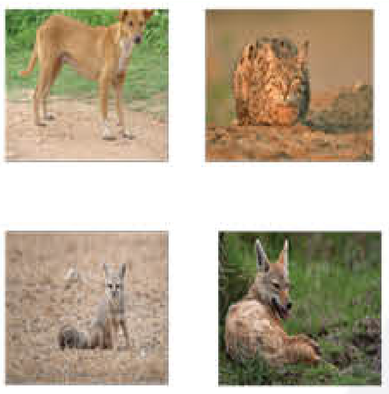

प्राथमिक पोषक

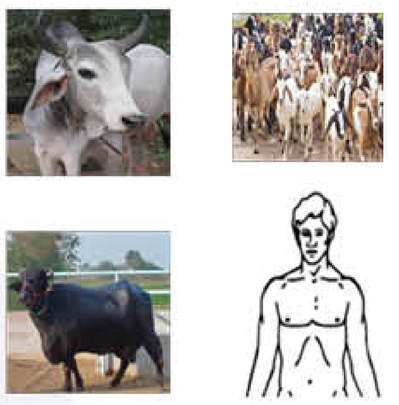

द्वितीयक पोषक

पशुधन भैंस, ऊँट, गाय, बकरी, भेंड और मनुष्यों मे यह रोग रेबीज से ग्रसित कुत्तों, लोमड़ी जैसे जानवरों के काटने के कारण होता है।

लक्षण

पशुओं में

- सुस्ती, बुखार, उल्टी और भोजन में अरुचि
- कुछ ही दिनो में मस्तिष्क की दुष्क्रिया, गतिविभ्रम, कमजोरी, पक्षाघात, मिर्गी, अश्वसन, निगलने मे परेशानी, अत्याधिक लार का स्राव, असामान्य आचरण, आक्रामी स्वरुप और स्वयं को क्षतिग्रस्त करना

रेबीज से ग्रसित भैंस

रेबीज से ग्रसित गाय

मनुष्यों में

- काटने के स्थान के अनुसार रोग के लक्षण 1 से 3 महीनों में आ सकते है
- प्रारंभिक अवस्था मे बुखार, दर्द, असामान्य झुनझुनी, चुभन और जलने वाली संवेदना घाव की जगह
- बाद की अवस्था में उत्तेजना और जलांतक के लक्षण दिखाई देते है जिसमें पानी से डर लगता है
- श्वसन और हृदय गति रुकने से मृत्यु
- पक्षघात स्वरुप: घाव के जगह से शुरुवात होकर स्नायुओं में पक्षाघात होना
- धीरे धीरे मुर्क्षा आती है जो मृत्यु में परिवर्तित हो जाती है

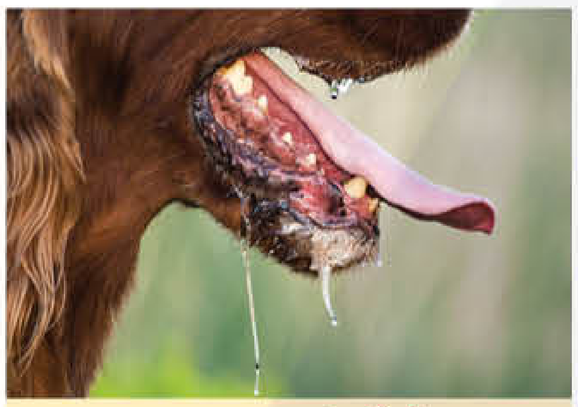

लकवाग्रस्त या गूंगा रेबीज
उदासीनता, अवसाद, मतिभ्रम, मुख से हमेशा लार का गिरना

उग्र रेबीज
भौकाना, पीछा करना , काटना, गुराना, आंखो का बड़ा होना, पक्षाघात और मृत्यु

बचाव एवं सुरक्षा

- काटने की जगह को साबुन और पानी, अपमार्जक, प्रोविडिन अयोडीन से 15 मिनट तक धोए
- टिटनस का टीका लगवाये
- रेबीज के टीके की पूरी खुराक ले
- तुरंत अपने नजदीकी प्राथमिक चिकित्सालय पर संपर्क करे

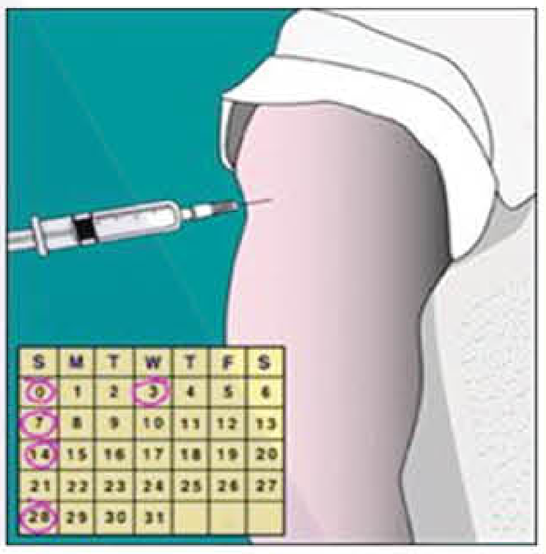

श्वान के काटने के बाद मनुष्यों मे टीका सारणी

अगर पशुओं मे इसके लक्षण दिखाई दे तो

- तुरंत ऐसे पशुओं को अन्य पशुओं से अलग कर दे
- लार के संपर्क में आई हुए वस्तुओं को न छूए
- ऐसे पशुओं का न तो दूध निकाले और न उपयोग में लाये
- पशु बेडें मे दस्ताने और मास्क लगाकर ही जाए
- अगर ऐसे पशुओं के संपर्क मे आ गए हो तो तुरंत रेबीज का टीका लगवायें
- पशु की मृत्यु के बाद पूरे बेड़े की साबुन और कीटाणु नाशक से पूरी तरह से सफाई करे
- संपर्क में आए चारे तथा वस्तुओं को नष्ट कर दे

श्वान में

श्वान में नियमित रुप से टीकाकरण कराए
पालतू जानवरो को घर मे अपनी निगरानी में रखे
कुत्तो का बधियाकरण या बांझिकरण कराए
आवारा पशुओं के जनसंख्या को नियंत्रित करे

श्वान में टीकाकरण

पहली खुराक	दुबारा
3 महीने पर	हर वर्ष

अधिक जानकारी के लिए अपने नजदीकी पशु चिकित्सक से संपर्क करे

फोटो स्रोत : इन्टरनेट

भाकृअनुप- राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान
ICAR- National Institute of Veterinary Epidemiology and Disease Informatics
पोस्ट बॉक्स 6450, यलहंका, बेंगलुरु 560064, कर्नाटक
फोन: 080-23093110, 23093111 फैक्स: 080- 23093222, वेबसाईट: www.nivedi.res.in, ईमेल: director.nivedi@icar.gov.in